

महाकवि-भर्तृहरि-कृतं

शतकत्रयम्

(नीति-शृङ्गार-वैराग्यात्मकम्)

पण्डितवर-धनसारगणि-विरचितव्याख्यायुतं

सम्पादक एवम् अनुवादक

ललित कुमार मण्डल

परिमल संस्कृत ग्रन्थमाला—६६

महाकवि-भर्तृहरि-कृतं

शतकत्रयम्

[नीति-शृङ्गार-वैराग्यात्मकम्]

पण्डितवर-धनसारगणि-विरचितव्याख्यायुतं

सम्पादक एवम् अनुवादक

ललित कुमार मण्डल

एम.ए. एम.फिल्, बी०एड०, नैट (यू.जी.सी.)

परिमल पब्लिकेशन्स

दिल्ली

प्रकाशक :

परिमल पब्लिकेशन्स

२७/२८, शक्ति नगर, दिल्ली ११०००७

दूरभाष : ०११-४७०१५१६८

प्रधान कार्यालय :

परिमल पब्लिकेशन्स

१, मनमोहन कॉम्प्लेक्स, नवरंगपुरा, अहमदाबाद ३८०००९

दूरभाष : ०७९-४९१६७६७४

ई-मेल : order@parimalpublication.com

© प्रकाशक

ISBN : 978-81-7110-219-8

संस्करण : वर्ष 2023

मूल्य : ₹ 350.00

मुद्रक

वंदना ऑफसेट प्रिंटर्स

सराय पीपल थला, दिल्ली

Parimal Sanskrit Series No. 66

BHARTṚHARI'S
ŚATAKATRAYAM

With the oldest commentary of Jain scholar
DHANASĀRAGAṆI

Edited by

LALIT KUMAR MANDAL

M.A., M.Phil, B.Ed. Net (U.G.C.)

PARIMAL PUBLICATIONS
DELHI

प्राक्कथन

(१)

मुण्डे पुण्डे मतिर्भिन्ना

अर्थात् प्रत्येक मस्तिष्क में मति [यानी बुद्धि, समझ, विचार अथवा दृष्टिकोण] अलग-अलग [होती है]। इसीलिए, पहले से अनेक हिन्दी-अनुवाद उपलब्ध होने पर भी मैंने कवि के तात्पर्य अथवा भाव को ध्यान में रखते हुए भर्तृहरि-द्वारा विरचित शतकत्रयम् का सारगर्भित एवम् शब्दशः हिन्दी में अनुवाद करने की बात सोची, जो 'परिमल पब्लिकेशन्स (दिल्ली)' के सहयोग से साकार हुई।

भारतीय धरातल पर ऐसे अनेक ऋषि-मुनि और मनीषी विद्वानों ने जन्म लेकर हमारे देश की संस्कृति-सभ्यता, ज्ञान-विज्ञान, धर्म एवम् दर्शन से सम्पूर्ण विश्व को परिचित कराया है; उन्हीं मनीषी विद्वानों में एक हैं—'भर्तृहरि'।

'भर्तृहरि' के जन्म-स्थल, समय एवम् जीवनवृत्त के विषय में विद्वानों के अनेक मत और किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं। सम्भवतः इनका जन्मस्थल प्राचीन मालव अथवा मरु प्रदेश है। अधिकांश विद्वानों ने इनका समय ४०० ई० से ६०० ई० के मध्य माना है। चीनी यात्री 'इत्सिंग' के अनुसार भर्तृहरि का मृत्युकाल ६५१ ई० है और ये बौद्ध थे; किन्तु वाक्यपदीयम् के 'अनादिनिधनं ब्रह्म' और नीतिशतकम् के 'नमः शान्ताय तेजसे' से प्रतीत होता है कि ये 'शैव' या वेन्दातोक्त 'ब्रह्मोपासक' थे।

भर्तृहरि के विषय में एक कथा प्रचलित है कि एक बार उज्जयिनी नगरी (उज्जैन) में राजा भर्तृहरि राजसभा में कई राजाओं के साथ बैठ कर विचार-विमर्श कर रहे थे, उसी समय हाथ में फल लिये एक ब्राह्मण वहाँ उपस्थित हुआ और आशीर्वचन कहते हुए राजा को वह फल दिया। राजा ने उस ब्राह्मण से पूछा— 'हे ब्राह्मण! यह फल आपने कहाँ से प्राप्त किया? क्या यह अदृष्टपूर्व (यानी जो पहले कभी न देखा गया हो, वह) फल है?' तब ब्राह्मण ने कहा— 'हे राजन्! फल तो बहुत हैं, लेकिन वे सभी ऐसा फल नहीं हैं, क्योंकि यह अमृत-फल है।' राजा ने बोला— 'यदि यह अमृत-फल है, तो आपको यह कैसे प्राप्त हुआ?' उन्होंने बताया— 'हे राजन्! मैंने देवता की आराधना की; प्रसन्न होकर उन्होंने मुझे यह फल प्रदान किया और कहा— 'हे ब्राह्मण! इस फल को खाकर तुम अजर-अमर बन जाओ।'

महाकवि-भर्तृहरि-कृतं

शतकत्रयम्

[नीति-शृङ्गार-वैराग्यात्मकम्]

पण्डितवर-धनसारगणि-विरचितव्याख्यायुतं

अथ प्रथमं नीतिशतकम्।

॥ॐ नमः सर्वज्ञाय॥

युगादिदेवोऽप्ययुगादिदेवः पुरा द्वितीयोऽपि सदाऽद्वितीयः।

यः पञ्चशाखोऽपि सहस्रशाखः सोमङ्गलो मङ्गलमातनोतु॥१॥

सर्वातिशयसंयुक्तं पञ्चाचारपरायणम्।

श्रीवीरं गरिमाधीरमभिवन्दे महात्मभिः॥२॥

नत्वाऽर्हन्तं गुरुं देवी शारदां कविसारदाम्।

श्रीमद्-भर्तृहरिवृत्तव्याख्यां विरचयाम्यहम्॥३॥

तत्रेष्टदेवताप्रणिधानसमाधानविधानपूर्वमभीष्टदेवतासंस्मरणं विधाय भूपति-
भर्तृहरिविरचितनीति-शृङ्गार-वैराग्य-भावभावितकठिनकवित्वार्थसंसूत्रेण किमप्यु-
दाहरणविवरणप्रपञ्चं देव-गुरु-भारती-प्रसादान्निवेदयिष्यामि। तद्यथा-

यां चिन्तयामि सततं मयि सा विरक्ता

साऽप्यन्यमिच्छति जनं स जनोऽन्यसक्तः।

अस्मत्कृते च परिशुष्यति काचिदन्या

धिकं तां च तं च मदनं च इमां च मां च॥१॥

[मैं] जिस [स्त्री] का निरन्तर चिन्तन [ध्यान अथवा प्रत्यास्मरण] करता हूँ, वह मेरे प्रति अनुराग-रहित [है]; वह भी दूसरे पुरुष को चाहती है, वह पुरुष दूसरी [स्त्री] में आसक्त [है]; कोई दूसरी [स्त्री] हमारे [अर्थात् मेरे] लिए म्लान हो रही है [मुरझा रही है, दुबली-पतली हो रही है अर्थात् मुझे चाहती है]। [मेरे द्वारा चाही गयी] उस [स्त्री] को, [उस स्त्री द्वारा चाहे गए] उस [पुरुष] को, [व्यग्र करने वाले] कामदेव को, [मेरे प्रति आसक्त] इस [स्त्री] को [और] मुझको [भी] धिक्कार है॥१॥